अमिया तीसरी में आ गई

प्रभात

अमिया तीसरी कक्षा में आ गई। यह बात उसने बछिया, मोर, बिल्ली, पिल्ले, अड़ोसी-पड़ोसी सबको बताई। यहाँ तक कि डाकिए को भी बताई। उसने डाकिए से पूछा, "बताओ अब मैं कौन-सी कक्षा में आ गई?"

"कौन-सी में आ गई?" डाकिए ने उससे ही पूछा।

"आपको पता ही नहीं? अब मैं तीसरी कक्षा में आ गई।" अमिया ने बताया।

"अरे वाह।" डाकिए ने कहा।

अमिया ने पूछा, "आप रेखा औरों के घर भी चिट्ठी देने जाते हो न?"

"रेखा!?" डाकिए ने सोच में पड़ते हुए कहा।

"अरे जिनकी एक भैंस की पूँछ सफेद है।" अमिया ने रेखा के घर की पहचान बताई।

"वे जो चरवाहे हैं?" डाकिए ने पहचानने की कोशिश की।

"हाँ, वही। आप उनके घर में सबको बता दोगे कि मैं तीसरी में आ गई?" अमिया ने डाकिए की आँखों में देखते हुए पूछा।

"बिल्कुल बता दूँगा?" डाकिए ने खुश होते हुए कहा।

"ऐसे तो आप गोलू दीदी औरों के घर भी बता सकते हो। वो तो और भी आसान है।"

अमिया ने कहा। "उनकी मुर्गी ने आजकल अण्डे देना बन्द किया हुआ है।" अमिया ने चट से पता भी बता दिया।

"वो तो पानी प्रसाद जी का घर है। और वे तो पानी-पतासी का ठेला लगाते हैं।" डाकिया जानता था कि उस मुहल्ले में मुर्गी केवल पानी प्रसाद जी के ही घर में है।

"आप उनके घर पर बता देना। चाची शाम को चाचा को बता देंगी। फिर कल आप चाची से पूछ लेना बताया कि नहीं?

"क्या बताया कि नहीं?" डाकिए ने ज़रा खीजते हुए पूछा।

"आप तो भूल भी गए। पहले समझ लो आप। देखो आज आप पानीपूरी चाची को बताना कि अमिया तीसरी

कक्षा में आ गई। फिर पानीपूरी चाची शाम को पानीराम चाचाजी को बता देंगी। फिर कल आप पानीपूरी चाची से पूछना कि चाची आपने चाचा को बताया या नहीं। अगर वे बताना भूल गई हों तो आप उनसे कह देना, आज ज़रूर बता दें। फिर अगले दिन पूछकर पता कर लेना चाची ने चाचा को बताया कि नहीं।" अमिया ने डाकिए को समझाया।

"देखो, यह तो बहुत लम्बा चक्कर हो जाएगा अमिया! मैं ऐसा करूँगा चिट्ठियाँ बाँटने के बाद बस-अड्डे पर जाकर पानीराम जी को उनके ठेले पर ही जाकर बता आऊँगा।" डाकिए ने कहा।

"तब फिर चाची को कौन बताएगा?"

"अब मैं चलता हूँ अमिया।" डाकिए ने साइकिल आगे बढ़ा दी।

"रुको तो सही पहले आप। जब आप चाची को बताओगे तो उनके पड़ोस में ही समीरा दीदी रहती हैं। वे मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। आप उनको भी बता देना।" अमिया ने साइकिल के कैरियर पर हाथ रखकर कहा।

"मैं यहीं से बताता हुआ जाऊँगा और हरेक घर में बता दूँगा। सारी दुनिया को पता चल जाएगा कि अमिया तीसरी में आ गई है, बस।" डाकिए ने कहा।

"मेरी नानी को भी पता चल जाएगा?" पर वे तो रामसिंहपुरा में रहती हैं?

"तो क्या हुआ। मैं डाकघर से छुट्टी लूँगा और कल सुबह की पहली बस से तुम्हारी नानी को खबर देने के लिए रवाना हो जाऊँगा। और कुछ?" डाकिए ने झल्लाकर कहा।

"और तो कुछ भी नहीं। पर आप रामसिंहपुरा ही चले जाएँगे?" अमिया ने बात पक्की करने के हिसाब से पूछा।

"क्यों नहीं जाऊँगा। यही तो एक काम बचा है जो मुझे इस दुनिया में करना है।" कहते हुए डाकिए ने साइकिल दौड़ा दी। "तो आप ज़रूर चले जाना। आप कितने अच्छे हैं। आप दुनिया में सबसे अच्छे हैं। अण्डे देने वाली मुर्गी से भी अच्छे।" अमिया ने कहा।

मार्क ट्वेन एक बहुत लोकप्रिय लेखक थे। एक बार उनके एक प्रशंसक ने उन्हें खत लिखा। उसे मार्क ट्वेन का पता नहीं मालूम था। उसने पत्र को लिफाफे में डालकर पते की जगह लिखा:
श्रीयुत् मार्क ट्वेन, पता नहीं मालूम,
ईश्वर करे, यह पत्र उन्हें मिल जाए।

कुछ दिनों के बाद उस प्रेमी पाठक को मार्क ट्वेन का पत्र मिला। पत्र में सिर्फ इतना लिखा था -

ईश्वर ने कृपा की।
मार्क ट्वेन

मेरा पन्ना

आनम जमील अहमद पावसकर, वडाला, मुम्बई

अनिल पूनम परमार, छठी, घाटकोपर, मुम्बई